पूर्ण संख्या— ९४

फ्रांस-दर्शन

नवम्बर १९४७ वर्ष ९

कार्तिक २००४ संख्या ५

सम्पादक

... मिश्र, बी० ए०

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ

स्थिति, सीमा, तथा विस्तार

झांसी ज़िला बुन्देलखंड के सब ज़िलों से अधिक बड़ा है। इसकी सूरत एक बन्द थैला से कुछ कुछ मिलती है। यमुना नदी के दक्षिण में यह सबसे मशहूर ज़िला है। हमारा ज़िला बहुत सी रियासतों और ज़िलों को छूता है। कोई अकेला ज़िला इतनी रियासतों को नहीं छूता है।

इसके उत्तर और उत्तर-पश्चिम में जालौन का ज़िला और समथर, दतिया और ग्वालियर राज्य है। पश्चिम की ओर लगभग ६० मील तक बेतवा नदी हमारे ज़िले को ग्वालियर राज्य से अलग करती है। यह नदी ज़िले को दो बार पार करती है और अन्त में फिर उत्तर की ओर पहुँच कर जालौन ज़िले और झांसी ज़िले के बीच में सीमा बनाती है। दक्षिण की ओर झांसी ज़िला मध्यप्रान्त के सागर ज़िले को छूता है। पूर्व की ओर ओरछा राज्य लगभग १०० मील तक झांसी ज़िले से मिला हुआ है। इसमें सिर्फ २६ मील तक ज़मीन नदी हमारे ज़िले को ओरछा से अलग करती है। अधिक आगे पूर्व की ओर धसान नदी

ज़िले को अलीपुरा, गौरिहार, बीहट, जिगनी और सरीला रियासतों से अलग करती है। ये सब रियासतें हमीरपुर ज़िले में शामिल हैं। ओरछा, दतिया आदि पड़ोसी रियासतों से कुछ गांव झांसी जिले के भीतर घुसे हुये हैं। पहले बेतवा के दक्षिण में ललित पुर अलग एक ज़िला था। वह झांसी से कुछ अधिक बड़ा था। अब वह झांसी में ही शामिल कर दिया गया है। दोनों के मिल जाने से आजकल झांसी ज़िले का क्षेत्रफल ३६०६ वर्गमील और जनसंख्या ७,७५,००० है।

प्राकृतिक विभाग

अगर एक सिरे से दूसरे सिरे तक झांसी ज़िले की सैर की जावे तो तरह तरह के सुन्दर दृश्य मिलेंगे धुर दक्षिण में विन्ध्याचल की ऊंची पहाड़ियां हैं। धसान नदी के ऊपर लखनजीर की पहाड़ी है। इसकी ऊंचाई आध मील से कुछ ही कम है। अगर नदी के किनारे से पहाड़ी की चोटी पर चढ़ें तो कई घंटे लग जावें। इसी तरह की सपाट पहाड़ियां दक्षिण में सब कहीं फैली हुई हैं। इनकी तलहटी से लेकर ललितपुर के पास तक लहरदार ऊंचा नीचा काली मिट्टी का

झांसी-दर्शन

मैदान उत्तर की ओर फैला हुआ है। बीच बीच में यह मैदान इतने नालों से कटा हुआ है कि शायद उन्हें ठीक ठीक गिना भी नहीं जा सकता। ललितपुर से आगे लाल धरती मिलता है। इस ओर असंख्य पहाड़ी टीले बिखरे हुये हैं। ये टीले कहीं नंगे हैं कहीं इनके ऊपर झरबेरी की कंटीली झाड़ियां हैं। बेतवा नदी की घाटी को छोड़कर इस तरह की लाल ज़मीन झांसी शहर तक चली गई है। मऊ तहसील के दक्षिण-पश्चिम में भी काफी दूर तक इसी तरह की ज़मीन है।

इसके आगे काली मिट्टी का समतल मैदान मिलता है। इसमें चट्टानें भी कम हैं। अन्त में पश्चिम की ओर चट्टानें एकदम छिप जाती हैं। लेकिन पूर्व की ओर लम्बी लम्बी पहाड़ियां दूर तक फैली हुई हैं। इधर नदियों के किनारे भी गहरे कटे हुये हैं। अगर हमें किसी खड्डे में चलना पड़े तो हम सामने तो दूर तक देख सकते हैं लेकिन दाहिनी या बाईं ओर १० गज़ दूर की चीज़ भी न देख सकें। खाने-पीने की सभी चीज़ें ज़मीन से मिलती हैं। काली मिट्टी को किसान लोग मार और काबर नाम से पुकारते हैं। कोई कोई

इसे मोटी या रेगर भी कहते हैं। बहुत पुराने समय में कुछ जली हुई चट्टानें इकट्ठी हो गईं। इनसे घिस कर जो मिट्टी बनी वह भी काली हो गई पानी पाने पर यह
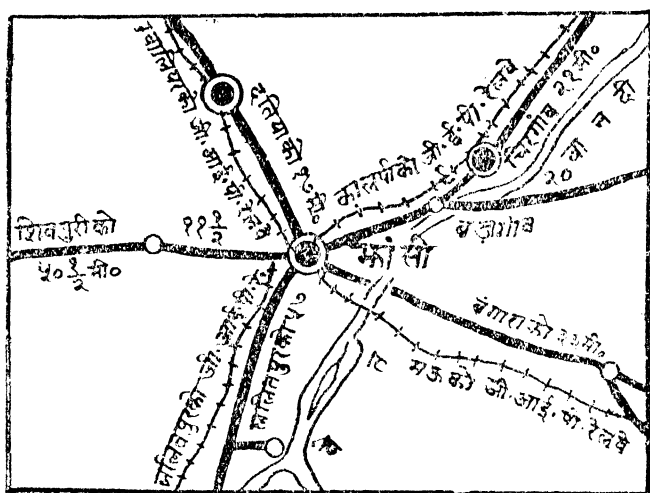
मिट्टी फैल जाती है और फिसलनी हो जाती है। लेकिन गरमी में सूखने पर वह सिकुड़ जाती है। उसमें दरारें दिखाई देने लगती हैं। फिर भी इसमें अधिक समय तक नमी बनी रहती है और किसानों को ऐसी मिट्टी वाले खेत सींचने नहीं पड़ते हैं। पर बहुत वर्षा होने

पर इसमें दलदल हो जाता है। इसमें जोतना बोना बन्द हो जाता है। पडुआ मिट्टी अधिक भारी होती

झांसी का सदर बाजार

है। इसका रंग कुछ हलका होता है। राकड़ ज़मीन नालों के पास मिलती है। किसी किसी ज़मीन में कंकड़

सघनता
२८४ मनुष्य प्रति वर्ग मील में
२३३ मनुष्य
२२७ मनुष्य
१८७ मनुष्य
१६२ मनुष्य
१५१ मनुष्य
बेतवा नदी
मोठ
गरौठा
झाँसी
बरुआसागर
उत्तर
मऊ
प०
पू०
द०
तालबहट
ललितपुर
महरौनी
ललितपुर (क्षेत्र०) महरौनी गरौठा झाँसी मऊ मोठ
ललितपुर (गाँव) महरौनी गरौठा झाँसी मऊ मोठ
झाँसी (पर) ललितपुर महरौनी मऊ गरौठा मोठ
झाँसी (मनुष्य) ललितपुर महरौनी मऊ गरौठा मोठ
७६५६१ जन संख्या वाले नगर
१६४००
१३७१५
१२७८७
५६००
४५००
३५७०
३३०० जन संख्या वाले नगर
झाँसी जिले में
जन संख्या की सघनता
अंग्रेजी ० ६ १२ मील

ज़िला झाँसी
अंग्रेज़ी मील
कठौंद नदी की नहर
कानपुर को
बेतवा नदी
जालौन को
पहूज नदी
झाँसी
मोठ
गरौठा
मऊरानीपुर
मऊ
अलीपुर को
उत्तर
प०
पू०
द०
तालबहट
बाँसी
ललितपुर
महरौनी
सौजना
मड़ौरा
मदनपुर
सागर से
० फुट से ५०० फुट तक
५०० फुट से अधिक
रेलवे
पक्की सड़क
कच्ची सड़क
ज़िले की सीमा
तहसील
नहर

पत्थर भी मिले रहते हैं। किसान लोग हलकी मिट्टी को पतरो और भारी को माटो कहते हैं। जहां खूब खेती होती है उसे वे तरेता कहते हैं। जिस धरती में खेती नहीं हो सकती है उसे बोहार या डांग कहते हैं। नदी-नालों के पास की तर ज़मीन को वे तरी कहते हैं।

नदियां

पानी सदा ऊंचे भाग से नीचे भाग की ओर बहता है। झांसी ज़िले के कुछ भाग ऊंचे हैं और कुछ नीचे हैं। इसलिये ज़िले में जो पानी बरसता है वह बड़े बड़े नालों या नदियों की सूरत में निचले भाग की ओर बहता है। बेतवा, धसान, पहुज और जमनी नदियों को देखने से ज़िले के ढाल का पता लग जायगा। बेतवा नदी कुमारी गांव के पास भूपाल राज्य से निकलती है। फिर यह उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। ललितपुर से कुछ दूरी पर दक्षिणी-पश्चिमी कोने से यह नदी अपने ज़िले में घुसती है। पहले तीस मील तक यह नदी इस ज़िले और ग्वालियर राज्य के बीच में सीमा बनाती है। फिर उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ कर यह नदी अपने ज़िले के अन्दर आती है। लेकिन ज़िलों को

पार करके यह नदी ओरछा राज्य में चली जाती है। अन्त में वह फिर झांसी शहर के पास ज़िले में घुमती है। वह बराबर उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। और झांसी जिले को जालौन से अलग करती है। इसका रास्ता अधिकतर पहाड़ी है। इससे यह कहीं कहीं झरने बनाती है। कहीं गहरे कुंड बन गये हैं। विन्ध्याचल पहाड़ को पार करते समय इनमें बड़ी गहरी कन्दरा बन गई है। लेकिन झांसी की सड़क के आगे बेतवा बहुत चौड़ी हो गई है। इसके बीच में कई टापू हो गये हैं। इसकी दो धारायें भी हो गई हैं। इन धाराओं के बीच में जंगल से ढकी हुई पहाड़ी है। मानिकपुर से आने वाली रेल के पुल के पास फिर ये दोनों धारायें मिलकर एक हो गई हैं धुकवान और परीक्षा के पास इसमें बांध बनाये गये हैं यहीं से सिंचाई की नहर निकलती है। पर इसमें नावों के चलने के लिये लगातार गहरा पानी रहता है। सिर्फ वीस स्थानों पर इसको पार करने के लिये घाट बने हैं।

धसान—बहुत छोटी नदी है। यह नदी भी भोपाल राज्य से निकलती है। पहले पहल यह नदी ललितपुर तहसील के दक्षिणी सिरे को छूती है। फिर यह लग-

भग १२ मील तक इस तहसील को सागर जिले से अलग करती है। लखनभार पहाड़ी के पास यह विन्ध्याचल को काटती है। इसके आगे यह पहाड़ी तली में बहती हुई ओर्छा राज्य में घुसती है। लगभग साठ मील इस राज्य में बहने के बाद घाट कोटरा के पास धसान नदी फिर झांसी जिले को छूती है और इसे हमीरपुर जिले से अलग करती है। अन्त में यह नदी हमारे जिले के उत्तरी-पूर्वी कोने के पास वेतवा में मिल जाती है। इस ओर इसकी तली कहीं रेतीली है कहीं पथरीली है। इसके किनारे बहुत ऊँचे हो गये हैं। वे अक्सर दो तीन मील तक गारों से कटे हुये हैं। बरसाती बाढ़ को छोड़ कर नदी में बहुत पानी नहीं रहता है। फिर भी इसको पार करने के लिये कई जगह नाव के घाट हैं। घाट लचूरा के पास इसके ऊपर रेल का मजबूत पुल बना हुआ है। उर सुखनई और लेखरी आदि छोटी नदियां धसान में गिरती हैं।

जमनी नदी मदनपुर नगर के पास विन्ध्याचल से निकलती है और उत्तर की ओर बहती है। इसमें बहुत से नाले भी मिल गये हैं। महरोनी और बानपुर

के बीच में यह कुछ पूर्व की ओर मुड़ जाती है। लेकिन आगे चल कर यह नदी फिर उत्तर की ओर मुड़ती है। लगभग २० मील तक यह ओरछा राज्य और झांसी जिले के बीच में सीमा बनाती है। इसी बीच में शाहजाद और सजनेम नदियां आकर इसमें मिल जाती हैं। वर्षा ऋतु में ये नदियां उमड़ कर बड़ी डरावनी हो जाती हैं। लेकिन और दिनों में इनमें बहुत ही कम पानी रहता है। इनके किनारों पर कंकड़ बहुत हैं। यहां खेती बिल्कुल नहीं होती है।

पहूज नदी ग्वालियर राज्य से निकलती है। पश्चिम की ओर से पछार-झांसी सड़क के पास यह नदी जिले में घुसती है। झांसी शहर इससे केवल तीन मील दूर रह जाता है। फिर पहूज नदी बाहर निकल कर जिले की पश्चिमी सीमा बनाती है। अन्त में भांडेर के पास पहूज नदी सीमा को छोड़ देती है और बहती बहती जालौन ज़िले में सिन्ध नदी से मिल जाती है। इसका रास्ता बहुत ही ऊंचा नीचा है।

झील और तालाब

जिले में इतनी बड़ी झीलें तो नहीं हैं जिनकी लम्बाई चौड़ाई कई मील हो या जिनमें बहुत गहरा

पानी हो। पर ज़िले की ऊंची नीची पथरीली ज़मीन में तालाब बहुत बन गये हैं। इनमें बरसात का बहुत सा पानी दूर दूर से आकर भर जाता है। पुराने ज़माने के चन्देल राजाओं ने लोगों के आराम के लिये बहुत से तालाबों को पक्का बनवा दिया। बरवा सागर या अर्जर को देखने के लिये लोग आते हैं। भसनेह के पास बोडा नाले का बांध बने कुछ साल हुए सबसे बड़ा तालाब तयार किया गया। इस पर लगभग आठ लाख रुपये खर्च हुये। इससे बड़ी सिंचाई भी होती है। पचवारा, मगरवारा और काचनेह ताल भी बहुत मशहूर हैं। बहुत से तालाब सिंचाई के काम आते हैं।

जलवायु

जिले में दिवाली से कुछ पहले ही सरदी पड़नी शुरू हो जाती है। दिसम्बर जनवरी में इतनी सरदी पड़ती है कि सभी लोग गरम कपड़े पहनते हैं। रात को भीतर सोते हैं। कुछ लोग आग तापते हैं। कभी कभी पाला भी पड़ता है जिससे अरहर और दूसरे मुलायम पौधे सूख जाते हैं।

होली से कुछ पहले न सरदी रहती है न गरमी।

इसे बसन्त कहते हैं। लेकिन कुछ दिनों में गरमी पड़ने लगती है। मई में बड़ी तेज़ गरमी पड़ती है। हवा से लपट सी निकलती है। नंगे पैर गरम धरती पर चलने से पैर में छाले पड़ जाते हैं। कभी कभी जोर की आंधी चलती है जिससे छप्पर उड़ जाते हैं और पेड़ उखड़ जाते हैं।

इसके बाद जुलाई में पानी बरसने लगता है। साल भर में एक गज़ से ऊपर (३८॥ इंच) वर्षा होती है।

झांसी जिले में हवा में अक्सर खुश्की रहती है। अगर भीगा कपड़ा कमरे के अन्दर भी डाल दें तो वह जल्द सूख जाता है। पानी इधर उधर बहुत इकट्ठा नहीं होने पाता है। इससे मच्छड़ नहीं बढ़ते हैं। लोग तन्दुरुस्त बने रहते हैं। इस तरह जिले की जलवायु बड़ी अच्छी है। जहां कहीं काली मिट्टी है वहां मच्छड़ अधिक पाये जाते हैं।

सिंचाई

जैसे हम पानी पीते हैं वैसे ही गेहूँ और दूसरे पौधे भी पानी चाहते हैं। अगर इन्हें ठीक ठीक पानी न मिले तो ये सूख जावें। झांसी जिले में साल भर

लगातार पानी नहीं बरसता है। इसलिये खेतों को सींचने की जरूरत पड़ती है। सिंचाई का काम कुछ तो कुओं से होता है। ललितपुर में कुआं खुदाने में अधिक खर्च नहीं होता है। लेकिन झांसी की पथ-रीली ज़मीन में कुआं बनवाने में बहुत रुपये लग जाते हैं।

तालाब भी कई हज़ार एकड़ ज़मीन सींचते हैं। तालाब कई जगह हैं। लेकिन गढ़वा सागर, कचनेह, मगरवारा और पचवारा बहुत मशहूर है।

इस ज़िले में नहर भी सींचने में बड़ी सहायता देती हैं। अब से पचास वर्ष पहले परीक्षा गांव के पास मौजा खुर्द में बेतवा नदी के ऊपर एक पक्का बांध बनाया गया। यह बांध झांसी शहर से सिर्फ १४ मील दूर है। यह बांध २५ फुट ऊँचा और लगभग एक मील लम्बा है। इसके बन जाने से ऊपर की ओर १७ मील तक नदी फैलकर चौड़ी हो जाती है। यहीं पर बड़े दरवाज़े बना दिये गये हैं जिनमें होकर नहर को पानी मिलता है। असली नहर झांसी से कानपुर जाने वाली सड़क के साथ चलती है। मेरठ

के उत्तर-पश्चिम में पुलिया गांव के पास यह दो शाखाओं में बंट जाती है। इन्हें हमीरपुर नहर और कुठौंद नहर कहते हैं। इस नहर के बनाने में लगभग ५ लाख रुपया खर्च हो गया। लेकिन इसके पानी से २१०० एकड़ जमीन सींची जाती है।

पहूज नदी से गढ़मऊ के पास सिंचाई की नहरें निकाली गई हैं। इनसे भी जमीन सींची जाती है। इतना होने पर भी हमारे जिले में सिंचाई काफी नहीं है। इसी से पानी कम बरसने से हमारे यहां अकाल पड़ता है। बहुत से घरों में रोटी बनाने के लिये अनाज नहीं रहता है। वे भूखों मरने लगते हैं। अब से डेढ़ सौ वर्ष पहले के अकाल में इतने लोग भूखों मरे कि लोग उसे चालीसा कह कर अब तक याद करते हैं। सम्वत् १८४० में होने से उसका नाम चालीसा पड़ गया।

कांस एक लम्बी पैनी और पतली घास है। इसकी उंचाई १ हाथ से २ गज तक होती है। इसकी जड़ें पौधे से भी अधिक बड़ी होती हैं और दो ढाई गज गहरी होती हैं। कांस छप्पर छाने या ढोर चराने के काम आता है। पानी पाने से यह खूब फैलता है।

इसका बीज सफेद रुए में छिपा रहता। यह इतना हलका होता है कि हवा के साथ उड़कर यह इधर उधर फैल जाता है। जब एक बार कांस का राज हो जाता है तो वहां हल नहीं चल सकता। किसान बिचारे का कोई वश नहीं चलता है इस जिले का बहुत सा भाग कांस से ढका हुआ है जहां किसी तरह की खेती नहीं होती है। अगर हम सब तरह की ऊसर जमीन को शामिल कर लें तो औसत से हर सौ बीघे पीछे पन्द्रह बीघे ऐसे मिलेंगे जहां खेती हो ही नहीं सकती है।

हर साल हमारे जिले की कुछ अच्छी जमीन कट कर नालों में बह जाती है। इसको रोकने के लिये कहीं कहीं बबूल और दूसरे पेड़ लगाये गये हैं। पेड़ की जड़ें मिट्टी को रोके रहती हैं, इससे मिट्टी जल्द कटने नहीं पाती है।

झांसी ज़िले में १११,२१३ एकड़ ज़मीन बन से घिरी हुई है। इसमें कहीं कहीं सागौन, बांस, महुआ आदि से अच्छी लकड़ी मिलती है। अधिकतर जंगल से जलाने के लिये ईंधन भले ही मिल जावे पर घर पाटने या हल और गाड़ी बनाने के लिये सुडौल लकड़ी वहां

नहीं होती है। कहीं कहीं पहाड़ों पर धौ की मजबूत लकड़ी मिलती है। इसे किसान खेती के हलों और बखरों के काम में लाते हैं जानवरों के चरने के लिये घास सब कहीं उगती है।

पशु

जिले भर के जङ्गलों में तरह तरह के जंगली जानवर रहते हैं। चीता और तेन्दुआ दोनों बड़े भयानक होते हैं। वे जानवरों को मार कर खा जाते हैं। कभी वे आदमियों पर भी हमला करते हैं। इसीलिये इन जानवरों को मारने के लिये इनाम दिया जाता है। भेड़िया और बनबिलाव अक्सर खोहों और गारों में रहते हैं। भेड़िया गांव में रात को चुप चाप आता है और भेड़ बकरियों को चुरा ले जाता है। कभी कभी वह सोते हुए बच्चे को भी ले जाता है। जङ्गली कुत्ते भी खूंख्वार होते हैं। सियार और लोमड़ियों की तादाद बहुत है लेकिन वे लोगों को कोई खास नुकसान नही पहुँचाते हैं। जङ्गली हिरणों के झुंड अक्सर खेतों को चर जाते हैं। लेकिन आदमी को देखते ही वे लम्बी छलांगें मारते हैं और देखते ओझल हो जाते

हैं। बनैला सुअर इनसे भी अधिक हानि खेतों को पहुँचाता है। वह गारों या कटीले झाड़ों में रहता है। किसान लोग इससे अपनी फसल को बचाने के लिये खेत के चारों ओर कटीले झाड़ जमा कर देते हैं। चिंकारा, नीलगाय, सम्बर और चीतल भी खेतों को चर जाते हैं। कहीं कहीं भालू भी मिलता है। बन्दर, खरगोश और सेही तो सब जगह बहुत हैं।

जिले में मोर, तोता आदि सुन्दर पक्षी भी बहुत हैं। नदियों में कई तरह की मछलियां पाई जाती हैं। बड़ी नदियों में मगर भी मिलते हैं जो बड़े जानवरों और आदमियों को भी घसीट ले जाते हैं।

घास की अधिकता होने से हमारे यहां गाय, भैंस अहीर और गूजर लोग बहुत पालते हैं। इससे घी दूध की कमी नहीं है। कभी कभी यहां से अच्छा घी बाहर भेजा जाता है। पर हल खींचने वाले अच्छे बैलों की कमी है। यहां के बैल दुबले पतले होते हैं। चन्देरी बैल अच्छा गिना जाता है।

अच्छे घोड़े भी बाहर से आते हैं। भेड़ बकरियों की संख्या कई लाख है।

झांसी-दर्शन

खेती

ज़िले में बहुत सी ज़मीन ऊसर है जंगल और कांस भी काफी फैले हुए हैं। इसलिये यहां खेती आधे से कम हिस्से में होती है। ललितपुर तहसील में तो एक चौथाई से कुछ कम ही ज़मीन ऐसी है जिसमें खेती होती है। खेती की ज़मीन वर्षा और कांस की कमी या अधिकता के अनुसार घटती बढ़ती रहती है। बहुत से खेतों में साल भर में सिर्फ एक फसल होती है। कुछ ऐसे हैं जिनमें अच्छी ज़मीन और सिंचाई होने से साल में दो फसलें तयार हो जाती हैं।

काली ज़मीन में ज्वार बहुत उगाई जाती है। वर्षा होते ही किसान लोग ज्वार को जुलाई महीने में बो देते हैं। कभी कभी इसके साथ अरहर भी बोई जाती है। मामूली ज़मीन में बाजरा बोया जाता है। ज्वार बाजरा की कटाई दिवाली के लगभग १ माह के बाद होने लगती है। लेकिन अरहर को पकने में देर लगती है। उसकी कटाई होली के बाद होती है। तिल, उर्द, मूंग को ज्वार बाजरा के ही साथ बोते और काटते हैं। कपास भी इन्हीं दिनों में बोई जाती है इसके टेंट सरदी में बोने (इकट्ठे किये) जाते हैं।

पहले उस ज़िले में गेहूँ बहुत होता था। अब इसकी खेती कुछ कम हो गई है। गेहूँ सरदी के शुरू होते ही बोया जाता है और होली के बाद कटता है। इन्हीं दिनों में चना, मटर, सरसों और जौ को बोते हैं। चना के खेत बहुत हैं।

आने जाने का मार्ग

ज़िले में झांसी शहर रेल का बड़ा जंकशन है। यहां कई रेलवे लाइनें मिलती हैं। एक लाइन यहां से मानिकपुर को गई है। एक लाइन झांसी से चिरगांव और मोठ होती हुई कानपुर को गई है। एक लाइन झांसी से आगरा होती हुई दिल्ली को गई है। पर हमारे ज़िले में इस लाइन की लम्बाई सिर्फ १२ मील है। इसके बाद यह लाइन दतिया राज्य में घुसती है। सब से बड़ी लाइन वह है जो झांसी से ललितपुर होती हुई भोपाल को गई है।

झाँसी शहर में पक्की सड़कों का भी अड्डा है। झांसी से एक पक्की सड़क कानपुर को आती है। दूसरी ओर यह सड़क सागर को गई है। झांसी से ग्वालियर को भी पक्की सड़क गई है। झांसी से

ललितपुर होती हुई मरौरा को जाने वाली सड़क भी पक्की है। इसी तरह झांसी से मऊ होती हुई नौ गांव को जो सड़क जाती है वह भी पक्की है। रेलवे स्टेशनों से पड़ोस के कस्बे को मिलाने वाली सड़कें अक्सर पक्की हैं। पर कच्ची सड़कें बहुत ज्यादा हैं। वर्षा में इनमें दलदल हो जाता है। गरमी के दिनों में इन पर धूल उड़ा करती है पर गाड़ी फंसने का डर नहीं रहता है। पक्की सड़कों के रास्ते में जो नदी पड़ती है उन पर अक्सर पुल बने हैं।

व्यापार

अब से ८० वर्ष पहले मऊ—रानीपुर ज़िले भर में सबसे बड़ी मंडी थी। लगभग ७ लाख रुपये का आलू, रंग और सूती कपड़ा बाहर जाया करता था। यहां की छींट, चुनरी और खरुआ को लोग बहुत पसन्द करते थे। बहुत से गांवों में सुन्दर साड़ी और धोती बनती थी। झांसी की कालीनें भी मशहूर थीं। घी, दाल और दूसरी चीज़ें भी खूब बिकती थीं। यह सब व्यापार बंजारे लोग अपने जानवरों की पीठ पर लाद कर करते थे। पाली का पान और जंगल से शहद बल्ली, लाख और गोंद बाहर जाता था। कुछ सामान

यहां से कालपी और कुछ ग्वालियर की ओर पहुँचता था।

रेल के निकलने पर झांसी शहर की स्थिति बड़ी अच्छी हो गई। यहां दो लाइनें मिल गईं। अब सब व्यापार यहां होकर बाहर जाने लगा। छोटा मोटा व्यापार देहाती बाज़ारों में भी होता है। ज़िले में कई बड़े बड़े मेले लगते हैं। मऊ का जल विहार और ललितपुर का रथ मेला देखने के लिये हज़ारों आदमी आते हैं। यहां बहुत सा माल बिकता है।

कारबार

बिजावर की पहाड़ियों में लोहा पहले बहुत साफ किया जाता था। जब से जंगल से लकड़ी लेने की मनाई हुई तब से भट्टियां बन्द पड़ी हैं। लोहे के पास ही कहीं कहीं २ गज की गहराई पर तांबा भी मिलता है।

इस जिले में पक्की सड़क बनाने के लिये गिट्टी या छोटा पत्थर बहुत है। ललितपुर में बलुआ पत्थर बहुत है। मकान बनाने का पत्थर झांसी, कानपुर, सागर

और आगरा को भेजा जाता है। कैलगवां में ऐसा पत्थर मिलता है जिससे सुन्दर प्याले बनते हैं।

अनुमान किया जाता है कि पठार में सोना, परोना में चांदी और सोनरई में तांबा बहुत है। इसको खोजने की तयारी हो रही है।

झांसी ज़िले में लगभग सवालाख एकड़ ज़मीन बन से घिरी हुई है। इसमें साखू तेंदू आदि पेड़ों से मजबूत लकड़ी मिलती हैं। बांस भी बहुत हैं। बहुत से लोग बन में लकड़ी का काम करते हैं। ईंधन इकट्ठा करने और लाख, गोंद, कत्था और शहद छुड़ाने में भी बहुत से लोग लगे हैं।

इस जिले में केवड़ा और खस बहुत है पर उससे सुगन्धित तेल निकालने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। खस से केवल (गरमियों में) टट्टियां बनाई जाती है। इस जिले में लगभग एक लाख मन कपास होता है। इसको ओटने के लिये मऊ में एक मिल है। पर अधिकतर कपास हाथ से ओटा जाता है। हाथ से कातने बुनने का काम कई जगह होता है। १३ मन से अधिक सूत हर साल काता जाता है। यहां के कुरते बुनाई के लिये बहुत प्रसिद्ध है। पर

करी लोग अधिक हैं। रंगाई और छपाई का काम भी कई जगह होता है। कुछ लोग दरी बुनते हैं।

लोग, धर्म, भाषा और पेशे

ज़िले में ७,७५,००० मनुष्य रहते हैं। जिले में ६४ फीसदी हिन्दू पांच फीसदी मुसलमान और शेष ईसाई, पारसी और जैन हैं।

हिन्दुओं में चमारों की संख्या सबसे अधिक है। वे जिले भर में फैले हुए हैं पर मऊ और मडरानी में उनके घर बहुत हैं। वे अकसर मजदूरी करते हैं उनके पास खेत बहुत कम हैं।

काछी लोगों का स्थान दूसरा है वे बेचने के लिये तरकारी उगाते हैं। इसलिये उनकी संख्या वहीं अधिक है जहां सिंचाई की सुविधा है और बाजार पास है।

संख्या में ब्राह्मणों का तीसरा स्थान है। इनमें कुछ दक्षिणी और मारवाड़ी ब्राह्मण हैं। पहले इनका यहां राज्य था। अब वे जमींदार और किसान हैं। जिले की लगभग ½ जमीन इनके अधिकार में है। इसके बाद अहीर और गड़रियों का स्थान हैं। अहीर लोग गाय भैंस पालते हैं। गड़रिया भेड़ बकरी चराते हैं। राज-

पूत बड़े बड़े जमींदार और किसान हैं। पहले वे यहां राज करते थे। मरोठा तहसील में कुर्मी और घोष ठाकुरों की जमींदारी अधिक है।

आधे से अधिक मुसलमान लोग खेती करते हैं। कुछ धुना और जुलाहे हैं।

यहां की भाषा बुन्देली या बुन्देलखण्डी हिन्दी है। पढ़े लिखे लोग पश्चिमी हिन्दी या उर्दू बोलते हैं। कुछ मरहठों के घरों में मरहठी बोली जाती है। अब से २०० वर्ष पहले कुछ कंघी बनाने वाले लोग अजमेर से आकर यहां बस गये। वे बंजारी बोलते हैं।

बहुत पुराने समय में, इस ज़िले के बड़े भाग में जङ्गल था। पर तेउगढ़ और दूसरे स्थानों में पुराने शिलालेख मिले है। इनसे पता चला हैं कि अब से पन्द्रह सौ वर्ष पहले यहां मौर्यवंश का राज्य था। इसी समय हूण लोगों का हमला हुआ। छठी सदी में यहां राजा हर्षवर्द्धन ने राज्य किया।

पहले इसका नाम जजभुक्ति था। यहीं नवीं सदी में राजा भोज का राज्य हुआ। इसके बाद चन्देले राजा हुए। इन्होंने कन्नौज के राजा को भी हरा दिया। जब पञ्जाब के राजा जयपाल पर अफगानिस्तान के

सुल्तान ने हमला किया तो पञ्जाब के मदद के लिये चन्देलों ने एक फौज भेजी थी। लेकिन मुसलमान मजबूत होते गये। जब कनौज के राजा ने मुसलमानों की अधीनता स्वीकार कर ली तो यहां के लोग कन्नौज वालों से बड़े नाराज हुए। इससे यहां भी मुसलमानों हमला हुआ।

यहां का राजा परमाल बहुत मशहूर है। पृथिवी-राज चौहान और उसके बीच में पहूज नदी के पास बड़ी भारी लड़ाई हुई। ललितपुर के पास मदनपुर गांव में एक ऐसा पत्थर मिला है जिस पर पृथिवीराज ने अपनी जीत का हाल खुदवाया था। लेकिन अब से सात सौ वर्ष पहले सुल्तान कुतुबुद्दीन ने इस जिले को अपने राज में मिला लिया। इस तरह चन्देली राज्य का अन्त हो गया। इन चन्देले लोगों ने बहुत से ताल, मन्दिर और महल बनवाये थे। उनके निशान अब तक बाकी हैं। कुछ ही समय में वीर बुन्देले लोग उठे। इनका पहला सरदार ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये छूरी लेकर अपने को बलिदान करने लगा उसका एक बूंद खून जमीन पर गिरा कि उसका हाथ रोक लिया

गया। वह फिर राजा हो गया। पर लोहू का बूंद नीचे गिरने के कारण उसके वंश के लोग बुन्देले कहलाने लगे।

बाहरी हमले होने पर भी चन्देले लोग बड़े बलवान हो गये। अन्त में अकबर ने बुन्देले राजपूतों को अपने वश में कर लिया।

अब से २०० वर्ष पहले यहां के राजा छत्रसाल ने मरहठों की मदद से मुग़लों के दांत खट्टे कर दिये। अब मरहठों का राज्य तेज़ी से बढ़ने लगा। उनके एक सरदार नारूशंकर ने झांसी शहर को बसाया और किले को मजबूत बना दिया। आगे चलकर १८०० ई० तक इधर का मरहठा राजा पूना दरबार से अलग होकर स्वाधीन हो गया। इसी बीच जो अंग्रेज़ी सौदागर हिन्दुस्तान में व्यापार करने आये थे वे राजा बन गये। उनका राज बढ़ते बढ़ते धसान नदी तक फैल गया। इस तरह १८१७ ई० में नारूशंकर का नाती (लड़के का लड़का) अंग्रेज़ों के आधीन हो गया। होते होते १८५३ में इस खानदान का अखिरी राजा बिना सन्तान के मर गया। झांसी का राज अंग्रेज़ी

राज्य में मिला लिया गया। विधवा रानी लक्ष्मीबाई को ५००० रू० साल की पेन्शन बंध गई।

तीन चार वर्ष में यहां गदर हुआ। अंग्रेज़ अफसर मार डाले गये बागियों ने राज लक्ष्मीबाई को सौंपा। कुछ अंग्रेज़ बरेठा में कैद कर लिये गये और बानपुर का राजा चन्देरी का मालिक बन गया। उसने बानपुर में नये ढंग का तोपखाना तयार करवाया। झांसी की रानी ने पंडवाहा मऊरानो आदि स्थानों पर अधिकार कर लिया रानी बड़ी बहादुर निकली उसका राज बेतवा और धसान नदियों के बीच में सब कहीं फैल गया। फिर वह बागी नाना साहब, तांतिया टोपी और बानपुर के राजा से मिल गई।

इतने में अंग्रेज़ी फौज बढ़ने लगी। इसे रोकने के लिये तांतियाटोपी ने रास्ते के जंगल में आग लगा दी। लेकिन कुछ ही समय में इस फौज ने झांसी को घेर लिया और ले लिया। रानी मरदाना पोशाक पहन कर कालपी की ओर चली आई। लड़ाई कई महीने तक चलती रही लेकिन आपस की फूट से बागी हार गये।

सब कहीं अँग्रेज़ी राज्य हो गया। तब से अब तक ज़िले में कोई खास घटना न हुई।

राज-प्रबन्ध

ज़िले का सबसे बड़ा हाकिम कलक्टर कहलाता है। उसका दफ़्तर झांसी शहर में है। यहीं वह कचहरी करता है। समय समय पर वह ज़िले का दौरा भी करता है। उसका एक सहायक ललितपुर में रहता है। तीन डिप्टीकलक्टर और असिस्टेण्ट मजिस्ट्रेट उसके काम में हाथ बटाते हैं। झांसी छावनी के लिये एक कण्टून मैजिस्ट्रेट अलग होता है। छावनी के सारे मुकद्दमे उसी के पास जाते हैं।

कलक्टर को पुलिस से बड़ी मदद मिलती है। खुफिया पुलिस के लोग भेष बदल कर जुर्म का पता लगाते है। दूसरे पुलिस के लोग वर्दी पहनते हैं। इनका सबसे बड़ा हाकिम पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट कहलाता है। उसको बहुत से थानेदार लोग मदद देते हैं ये लोग अपने अपने थाने की देखभाल करते हैं। इनको कस्बों में सिपाहियों और गांवों में चौकीदारों से मदद मिलती है।

मुकदमों का फैसला करने के लिये जज, कलक्टर ज्वाइंट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलक्टर से मदद मिलती है। मालगुज़ारी वसूल करने के लिये पटवारी कानूनगो नायब तहसीलदार और तहसीलदार होते हैं।

शहर की सफाई और शिक्षा का काम म्यूनिसिपेलिटी के मेम्बर करते हैं। इनको शहर के लोग हर तीसरे वर्ष चुना करते हैं। इसी तरह जिले भर की शिक्षा, सफाई आदि का प्रबन्ध डिस्ट्रिक्टबोर्ड के मेम्बर लोग करते हैं। इन मेम्बरों को देहात के लोग चुना करते हैं।

झांसी-तहसील

बबीग एक बड़ा गांव है। ललितपुर से झांसी जाने वाली पक्की सड़क यहां होकर जाती है। झांसी शहर यहां से १७ मील दूर है। गांव में तीन बड़े तालाब हैं। यहां एक स्कूल, थाना और डाकखाना है। इसी नाम की रेलवे स्टेशन गांव से २ मील दूर है। लेकिन यहां तक पक्की सड़क जाती है।

बड़ा गांव बेतवा नदी के बायें किनारे पर बसा है। इसके पास ही फौजी कैम्प है। लेकिन बरसात में इधर बाढ़ आ जाती है।

झांसी-दर्शन

मड़वा सागर—उस सड़क पर बसा है जो मऊ से झांसी को जाती है। झांसी शहर यहां से १२ मील दूर है। झांसी-मानिकपुर लाइन यहां से सिर्फ दो मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहां से ¼ मील पूर्व की ओर बड़ी झील है। अब से २०० वर्ष पहले इस झील और इसके किनारे पर बसे हुए किले को ओरछा के राजा उदेत सिंह ने बनवाया था। इसी के पानी से सिंचाई हो जाने के कारण यहां तरह तरह की तरकारी उगाई जाती है। यह झांसी शहर में बिकने जाती है। वहां अजायब घर बनाने के लिये महोबा आदि स्थानों से मूर्तियां मंगाकर इकट्ठी की गई थीं। इसके पास ही कई मठों के खंडहर हैं।

बिजोली इस गांव में होकर झांसी से सागर को पक्की सड़क जाती है। इसके पास ही सिंचाई का एक ताल है। किनारे पर एक पुराना चन्देरी मन्दिर है।

रकसा गांव झांसी से ७ मील दूर है और झांसी-सीपरी सड़क पर पड़ता है। गांव के पास ही ईंटों का बना हुआ पुराना टूटा-फूटा किला है। अच्छी जमीन को नालों के कटने से बचाने के लिये यहां कई प्रयत्न हुए।

देश दर्शन

झांसी शहर कलकत्ता और बम्बई से लगभग बराबर दूरी पर है। यह एक बड़ा रेलवे जंकशन है। यहां से एक लाइन मऊ हरपालपुर, महोबा, बांदा और करवी होती हुई मानिकपुर को गई है। दूसरी लाइन उत्तर की ओर कानपुर को और दक्षिण की ओर इटारसी को गई है। एक लाइन आगरा को जाती है। यहां से कई पक्की सड़कें भी पड़ोस के शहरों को जाती हैं। कच्ची सड़कों का तो जाल सा बिछा हुआ है।

लेकिन यह शहर बहुत पुराना नहीं है। अब से लगभग चार सौ वर्ष पहले बेगरा पहाड़ी के नीचे अपने दो घर बना लिये थे। जिस पहाड़ी पर किला बना है। उसी का नाम बांगरा है। उस समय यहां किला न था। वे पहाड़ी के ऊपर बैठकर दूर तक अपने ढोरों को देख सकते थे। फिर ८० वर्ष बाद ओरछा-बाद के बीरसिंह महाराज ने यहां किला बनवा दिया। किले के पड़ोस में रहने से जान माल की रक्षा होती थी। इसलिये किले के नीचे अब एक बड़ा कस्बा हो गया। अब से ३०० वर्ष पहले यह किला मुगलों के हाथ में चला गया। लेकिन वे इसे बहुत दिनों तक न

रख सके। १०० वर्ष बाद मरहठों ने इस किले को उनसे छीन लिया। उन्होंने इसे बहुत मजबूत भी बना लिया। अब से लगभग सौ वर्ष पहले मरहठों ने लक्ष्मी तालाब, मन्दिर और शहर की चारदीवारी बनवायी। गदर से तीन चार वर्ष पहले झांसी का किला और शहर अंग्रेज़ों के हाथ में आया। ग़दर में इनकी हालत बड़ी नाज़ुक हो गई। १८६० ई० में यह शहर और किला सिन्धिया महाराज को दे दिया गया। ग्वालियर के किले में अंग्रेज़ी फौज रहने लगी। १८८५ ई० से फिर अदल बदल हो गया। झांसी में अंग्रेजी फौज रहने लगी और ग्वालियर पर सिन्धिया महाराज का अधिकार हो गया। तब से अब तक यहां बराबर अंग्रेजी शासन है। किले के भीतर शिवरात्रि को लोग मन्दिर का दर्शन करने जा सकते हैं।

कई रेलों और सड़कों का मेल होने से झांसी शहर का कारबार बहुत बढ़ गया है। पास ही रेलवे का कारखाना है। जहां रेल के डब्बों की रंगाई, मरम्मत और बनाने का काम होता है। यह शहर जिले भर की राजधानी है। इसलिये यहां बड़ी बड़ी कचहरी और दफ्तर हैं। जिले भर के बड़े बड़े मुकद्दमे यहीं तय होने

जाते हैं। यहां एक कालेज और कई स्कूल है। यहीं बेतवा नहर का बड़ा दफ़्तर है। यहां जी० आई० पी० रेलवे का एक बहुत बड़ा कारखाना है जिसमें लगभग चार हज़ार आदमी काम करते हैं। यहां कालीन भी अच्छे बनते हैं। यहां एक इण्टर गवर्नमेंट कालेज और तीन हाई स्कूल हैं।

कोच भवन

यह गांव झांसी से ४ मील पूर्व की ओर कानपुर जाने वाली सड़क पर बसा है। इसके पास सिंचाई का एक पक्का बड़ा ताल है।

मोठ

मोठ कस्बा झांसी से कानपुर जाने वाली पक्की सड़क से लगा हुआ बसा है। यहां तहसील, थाना, डाकखाना स्कूल और रेलवे स्टेशन है। पड़ोस में ही गुसाइयों के बनवाये हुए किले के खंडहर हैं।

बघैरा में एक पहाड़ी के ऊपर एक छोटा मन्दिर है। यहां दो सच्ची सड़कें मिलती हैं।

चिरगांव पहले बुन्देले सरदारों के हाथ में था। ग़दर के बाद उनकी जागीर छिन गई और किला तोड़

दिया गया। फिर भी यहां का व्यापार कुछ कुछ बढ़ रहा है। इराछ गांव बेतवा नदी के दाहिने किनारे बसा है। नदी को पार करने के लिये यहां एक घाट है। यहाँ होकर एक पक्की सड़क झाँसी को जाती है। झाँसी शहर यहाँ से ४२ मील दूर है। गाँव के बाज़ार में फसली चीजों को छोड़ कर छींट और चुनरी भी बिकने आती हैं। चुनरी लाल या पीली रंगी होती है। इसके बीच बीच में सुन्दर बेल बूटे रंगे रहते हैं। औरतें चुनरी ओढ़ना बहुत पसन्द करती हैं।

मुसलमानी समय में यह कस्बा सूबा आगरा की एक सरकार की राजधानी था। यहाँ बहुत पुराने खंडहर हैं। यहाँ की मस्जिदों और इमारतों में इनसे कहीं अधिक पुराने हिन्दू राजाओं के समय के खम्भे और पत्थर लगे हुए मिलते हैं। पर अब वे अधिकतर खंडहर हैं।

पूंछ गाँव झाँसी से ४० मील और मोट से ६ मील दूर है। झांसी—कानपुर सड़क यहां होकर जाती है। पास ही रेलवे स्टेशन है। यहां काफी बड़ा बाजार लगता है। यहीं बहुत मोटी कच्ची दीवारों से घिरा हुआ पुराना किला है।

भासनेह—यह गांव गरौठा से आठ मील दूर है। इसके पास ही बन है। यहाँ से १२ मील उत्तर की ओर एक पहाड़ी पर एक पुराना किला बना है। गदर के दिनों में भासनेह के ठाकुरों ने किले पर अपना अधिकार कर लिया था।

गरौठा गांव धसान नदी से ७ मील दूर लखेरी नाले के किनारे बसा हुआ है। इसके अड़ोस पड़ोस कटी फटी जमीन और जङ्गल है। वैसे तो यहां से झाँसी और दूसरे कस्बों को सड़क गई है। पर बरसात में रास्ते के नालों को पार करना मुश्किल हो जाता है। इन दिनों लोग मऊ रेलवे स्टेशन पर गाड़ी में सवार होकर झांसी पहुँचते हैं।

गुरसराय—यह क़स्बा बेतवा और धसान नदियों के बीच में समतल ज़मीन पर बसा है। यहां से एक पक्की सड़क गरौठा को गई है। कच्ची सड़क मोठ और दूसरे गांवों को भी गई है। गांव के आधे मकान पक्के बने हैं। बीच में बाज़ार है। पास ही क़िला और पक्का ताल है। पहले मिर्ज़ापुर की ओर से आने वाली गुड़ का व्यापार बहुत होता था। इसलिये इसका नाम गुर

(गुड़) सराय पड़ गया। गरोठा तहसील में यह सबसे बड़ा कस्बा है यहां पुराने समय का बना हुआ एक किला है जिसमें यहाँ के सबसे बड़े ज़मींदार रहते हैं ये पेशवा वंश के जागीरदार हैं।

मऊ तहसील

मऊ नगर झाँसी से ३६ मील दूर नौ गाँव जाने वाली पक्की सड़क पर बसा है। यहाँ से उत्तर की ओर गुर सराय को और दक्षिण की ओर टीकमगढ़ को पक्की सड़कें गई हैं। कच्ची सड़कें गरौठा और लहचूरा को गई हैं। अक्सर इसे मऊ-रानीपुर कहते हैं। लेकिन रानीपुर गांव यहां से ४ मील पश्चिम की ओर सुपरार और सुखनई नदियों के संगम पर बसा है। सुखनई नदी मऊ कस्बे को स्टेशन से अलग करती है। गांव के मकान बीच बीच में पेड़ होने से बड़े सुडौल मालूम होते हैं। यहां कई मन्दिर हैं। चौड़ी पक्की सड़क के दोनों ओर दुकानें हैं। एक भाग में उनका रंग कुछ लाल है। इसी से बाज़ार का नाम ही लाल बाज़ार हो गया। मरहठों ने यहां कुछ कुछ किलाबन्दी करवाई थी। लगभग सौ वर्ष पहले पिंडारियों ने इसे एकदम लूट

लिया था। गदर में भी यहां के लोगों को बड़ी हानि उठानी पड़ी।

फिर भी यहाँ काफी व्यापार होता है। यहां का खरूआ, पतरी, चांती और ज़मरूदी कपड़ा बहुत मशहूर है। यहां से चना, दाल और घी बाहर को बहुत जाता है। शक्कर, नमक, कपड़ा और गेहूँ बाहर से आता है।

भादों के महीने में सुखनई नदी के किनारे यहां जल विहार मेला लगता है। यहां के मेले में गाय-बैल और दूसरे जानवर भी बहुत बिकते हैं।

अड़जार गांव के दक्षिण में एक बड़ी झील है। इससे खेत सींचे जाते हैं। कहते हैं कि सन् १६७१ ई० में ओरछा के सुजन सिंह ने इसे बनवाया था। इसके पक्के किनारों के भीतर ५८ मील का पानी बह आता है। इसमें एक बांध मरहठों ने तयार कराया था।

कटेरा कस्बा मऊ से १५ मील और झांसी से ३० मील दूर है। यहीं मिट्टी के बर्तन कुल्हाड़ी, बसूला आदि अच्छे बनते हैं।

घाट कोटरा धसान नदी के पास है। यह गाँव मऊ से १२ मील और झांसी से ५२ मील दूर है।

जैसा इसके नाम से ही ज़ाहिर है। यहां नदी पार करने के लिये १ घाट है।

घाट लहुचुरा धसान के किनारे पर झाँसी से ५० मील और मऊ से १० मील दूर है। नदी को पार करने के लिये यहाँ एक घाट है। लेकिन यहां से ३ मील दूर धसान नदी के ऊपर झांसी मानिकपुर रेलवे का पुल है। लहुचुरा के पास हीसिंचाई के लिये एक बड़ा (२२१० फुट लम्बा) बाँध बना हुआ है।

रानीपुर—अब से ढाई सौ वर्ष पहले ओरछा-नरेश की विधवा रानी हीरादेवा ने इसे बसाया था। इसीलिये इसका यह नाम पड़ गया। यह सुखनई नदी के बायें किनारे बसा है। नदी की रेतीली तली में साफ पानी बहता है। पश्चिम की ओर बाज़ार है। बाहर मरहठों का बनवाया ईंट का पुराना किला है। बाहर मरहठों का बनवाया ईंट का पुराना किला है। पर यह गाँव धीरे धीरे घट रहा है।

सकरार—एक छोटा गांव है। यह झाँसी और मऊ से बराबर की दूरी पर है। उत्तर-पश्चिम की ओर आल्हा-ऊदल की बनवाई हुई बैठक के खंडहर हैं।

सियाउरी—एक बड़ा गांव है। यहीं रानी पुर से आने वाली सड़क मऊ से गुरसराय जाने वाली असली सड़क में मिलती है। यहां सिंचाई का एक बड़ा ताल है।

ललितपुर तहसील

ललितपुर—पहले यहाँ जिले का सब से बड़ा दफ़्तर था। अब यह झाँसी में शामिल कर दिया गया है यहाँ अब केवल तहसील है इस तहसील का यही सबसे बड़ा शहर है और रेलवे स्टेशन है यह शाहज़ाद नदी के पश्चिमी किनारे पर बसा है। इसके उत्तर में बियना नाला है। कटरा और नजही यहाँ के दो बाज़ार हैं। यहाँ से तिलहन, चमड़ा, घी, घास, हड्डी और लकड़ी बाहर जाती है। शक्कर, नमक और कपड़ा बाहर से आता है। यहाँ लगभग ५० हिन्दू मन्दिर हैं। यहाँ अंग्रेज़ी हाई स्कूल भी है।

ताल बेहत कस्बा झाँसी से सागर जाने वाली सड़क से लगा हुआ बसा है। यह क़स्बा झाँसी से ३० मील और ललितपुर से ३६ मील दूर है। स्टेशन

क़स्बे से सिर्फ़ डेढ़ मील दूर है। इसके नाम से ही ज़ाहिर है कि यहाँ एक बड़ा ताल है।

गोंड बोली में बेहत गाँव को कहते हैं। इसका बहुत सा भाग पहाड़ी के पश्चिम में बसा है। अब से लगभग तीन सौ वर्ष पहले चन्देरी के राजा ने यहां एक किला बनवाया था। गदर में क़िला टूट फूट गया। पास ही नरसिंह का मन्दिर और एक पठान दरगाह है। गाँव के बीच में एक बाजार है। इसके इधर उधर खपड़ैल से छाई हुई नीची दुकानें हैं।

ताल कस्बे से एक चौथाई मील दूर है। यह बड़ा ताल दो बाँधों के बनाने से तयार किया गया। कहते हैं कि इसका बनाने वाला भूरा ब्राह्मण था। यहाँ के किसान लोग इस भले ब्राह्मण को अब भी बड़े प्रेम से याद करते हैं।

जाखलोन से एक कच्ची सड़क ललितपुर को जाती है जो वहां से उत्तर-पूर्व की ओर १२ मील दूर है। स्टेशन लगभग आध मील दूर है। गाँव से स्टेशन को पक्की सड़क जाती है। यहाँ थाना, डाकखाना और स्कूल है। यहां हरबार को बाज़ार लगता है।

देश दर्शन

जखौरा गांव ललितपुर से उत्तर-पश्चिम की ओर १७ मील दूर है। एक बड़े तालाब के बांध के नीचे गांव बड़ा सुन्दर बसा है। यहां हर वृहस्पतिवार को बाज़ार लगता हैं। इसी नाम की स्टेशन गांव से पूर्व पांच मील दूर है।

मदनपुर—यह गांव ललितपुर से ३६ मील की दूरी पर विन्ध्याचल के सबसे आसान दर्रे के पास बसा है। पड़ोस में ही चन्देलों का बनवाया हुआ पक्का ताल है। गांव के ठीक दक्षिण में पत्थर निकलता है। पहले यहां कच्चा लोहा भी साफ किया जाता था। इसके पड़ोस में बहुत पुराने खंडहर हैं। यहां की पुरानी बारादरी पर पृथ्वीराज चौहान के दो लेख खुदे हैं।

पाली एक बड़ा गाँव है। ललितपुर से दक्षिण की ओर यह गांव १ मील दूर है। बुन्देलों का बनवाया हुआ किला एकदम उजड़ गया है। यहां पान के बड़े बड़े बगीचे हैं। हर बार को बाज़ार लगता है। एक मील दूर पहाड़ी चोटी पर जङ्गल से घिरा हुआ नील कंठ महादेव का मन्दिर है।

झांसी-दर्शन

सोरों कलां—एक बड़ा गांव और परगना है। ललितपुर से २८ मील दक्षिण में यह गांव विन्ध्याचल पहाड़ पर बसा है। इसी से यहां के घर बलुआ पत्थर के बने हैं। उत्तर की ओर एक पुराना मरहठों का बनवाया हुआ किला है। कुछ लोग कहते हैं कि इस
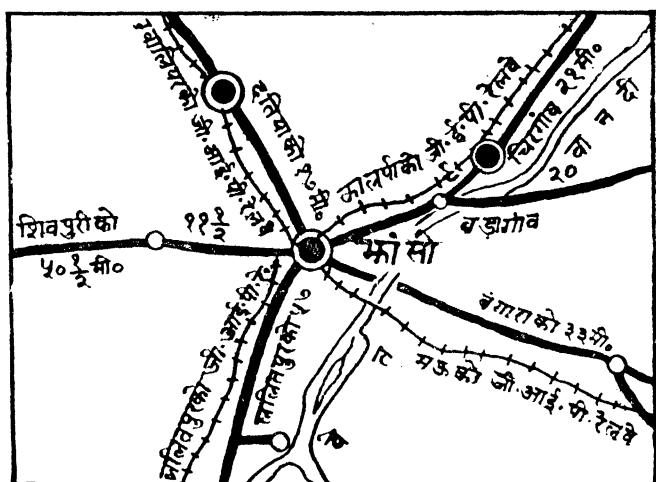
किले को गोंड लोगों ने बनवाया था। इसके अन्दर एक बाउली है। इससे तुम बिना रस्सी के ही पानी भर सकते हो पश्चिम की ओर एक सुन्दर मन्दिर है जो एक छोटी धारा के किनारे बसा है। ग़दर के दिनों में

लेने के लिये सागर से एक फौज भेजी गई थी। लेकिन

झांसी का सदर बाज़ार।

बुन्देला सरदारों ने इस किले को छीन लिया था। इसे

यह फौज भी बुन्देलों से मिल गई और बागी बन गई।

बांसी गांव उस पक्की सड़क पर बसा है जो ललितपुर से झांसी को गई है। यह ललितपुर से केवल १३ मील दूर है। लेकिन झांसी यहां से ४३ मील दूर है। यहां पहुँचने के लिये जखौरा स्टेशन पर उतरते हैं जो गाँव से केवल ५ मील दूर है। यहाँ हर बुधवार और रविवार का बाजार लगता है। कोई तीन सौ वर्ष पहले यहाँ के राजा कृष्णराव ने एक किला बनवाया था। अब उस किले में डिस्ट्रिक्ट (जिले) का बंगला है।

बाँट गाँव जखलौन रेलवे स्टेशन से केवळ ४ मील दूर है। लेकिन बरसात में शाहजाद नदी में बाढ़ आने से स्टेशन तक पहुंचना कठिन हो जाता है। १८६८ के अकाल में यहाँ एक सुन्दर सिंचाई का ताल बनवाया गया था। ताल के ऊपर चुआन झरना है। इसके पास ही शिवरात्रि को महादेव का मेला लगता है।

बिजरोया के लोग कई छोटे-छोटे गाँवों में बसे हैं। इसी नाम की स्टेशन यहाँ से २ मील दूर है। कहते हैं कि यहां बारी बारी से भील, गोंड, चन्देल और बुन्देल लोगों की बस्तियाँ बसीं। यहां से दो मीळ दूर स्टेशन पर

सघनता
२८४ मनुष्य प्रति वर्ग मील में
२३३ मनुष्य " "
२२७ मनुष्य " "
१८७ मनुष्य " "
१६२ मनुष्य " "
१५१ मनुष्य "
बेतवा नदी
मोठ
गरौठा
चिरगांव
झाँसी
गढ़िया पाठक
बरुआ सागर
उत्तर
रानीपुर
मऊ
प०
पू०
द०
तालबहेट
बेतवा नदी
ललितपुर
महरौनी
ललितपुर (क्षेत्र०) महरौनी गरौठा झाँसी मऊ मोठ
१०५९ ५२५ ४५६
ललितपुर (गाँव) महरौनी गरौठा झाँसी मऊ मोठ
३८४ २६८ १७६ १३
झाँसी (घर) ललितपुर महरौनी मऊ गरौठा मोठ
३६२१६ ३४४६१
झाँसी (मनुष्य) ललितपुर महरौनी मऊ गरौठा मोठ
१७५१८१
७६५६१ जन संख्या वाले नगर
१६४०० " "
१३७१५ " "
१२७६७ " "
५६०० " "
४५०० " "
३५७० " "
३३०० जन संख्या वाले नगर
३२३० " "
२६०० " "
२७०० " "
१६०० " "
झाँसी ज़िले में
जन संख्या की सघनता
अंग्रेजी ० ६ १२ मील

बांसों की मंडी है।

चांदपुर के पास कई पुराने जैन मन्दिरों के खण्ड-हर हैं। पास ही बहुत से पुराने मन्दिर हैं। एक जगह ८ सौ वर्ष का पुराना लेख खुदा हुआ है।

देवगढ़ दक्षिणी-पश्चिमी सीमा पर एक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ से कुछ ही दूर बेतवा के किनारे करनाली किला बना हुआ है। पास ही जैनियों के १६ मन्दिर हैं। मैदान में प्रसिद्ध दशावतार विष्णु (दस अवतारों) का मन्दिर है। एक मन्दिर पर राजा भोज के समय का लेख खुदा हुआ है।

धौरी गांव ललितपुर से १८ मील दक्षिण की ओर विन्ध्याचल पठार पर बसा है। कहते हैं कि पुराने समय में जब जरासन्ध ने मथुरा पर चढ़ाई की तो श्रीकृष्ण और बलराम दौड़ कर यहां छिप गये इसी से इसका नाम दौरी पड़ गया। इस गाँव के पड़ोस में जङ्गल बहुत है। दो मील की दूरी पर हरदारी से पत्थर निकलता है। इसी से आजकल यहां से लकड़ी और पत्थर बाहर को भेजे जाते हैं।

ज़िला झाँसी
अंग्रेज़ी मील
कठौद नदी की नहर
बेतवा नदी
जालौन को
पहूज नदी
मोठ
ककरवई
गरौठा
बबीना
तालबहट
बाँसी
ललितपुर
महरौनी
मदनपुर
नाराहट
सेतपुर
सोजना
मऊरानीपुर
अलीपुर को
उत्तर
प०
पू०
द०
० फुट से ५०० फुट तक
५०० फुट से अधिक
रेलवे
पक्की सड़क
कच्ची सड़क
ज़िले की सीमा
तहसील
नहर
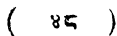
दुधई—ललितपुर से ठीक दक्षिण में आजकल यह एक छोटा गांव है। पर इसके पड़ोस के खंडहरों को देखने से मालूम होता है कि पुराने समय में यह बड़ा भारी शहर रहा होगा। मुझा नाला के आर पार बांध बन जाने से नीचे एक चौकोर कुआ (सोता) निकल आया। इससे यहां एक झील तयार हो गई जो सिंचाई के काम आती है। तालाब के पूर्व में जंगल से ढका हुआ वामन का मन्दिर है।

हरसपुर—ललितपुर से १६ मील उत्तर की ओर एक छोटा गांव है। पर कहा जाता है कि पुराने समय में यह गोंड और चन्देलों की राजधानी रह चुका है।

महरोनी—महरोनी ललितपुर के दक्षिण पूर्व में ३३ मील की दूरी पर स्थित है। टीकमगढ़ को जाने वाली पक्की सड़क यहाँ होकर जाती है। यहाँ तहसील थाना, डाकखाना और टाउन स्कूल है। हर सोमवार को यहाँ काफी बड़ा बाजार लगता है जिस क़िले में आजकल थाना और तहसील है उसे चन्देरी के राजा मानसिंह ने अब से लगभग दो सौ वर्ष पहले बनवाया था। फिर यह सिन्धिया महाराज के हाथ लगा। ओर्छा

के राजा ने इसको लेने की कोशिश की लेकिन वे उसे ले न सके।

सुनरई गांव ललितपुर से ३६ मील दक्षिण-पूर्व की ओर है। यहाँ महाराज छत्रसाल के नाती (लड़के का लड़का) का बनवाया हुआ लगभग २०० वर्ष का पुराना क़िला है। ग़दर में यह बहुत कुछ टूट गया। यहीं कुछ पुराने मन्दिर हैं। पास में ताँबा निकलता है।

महरोनी तहसील

बानपुर गाँव जमनी नदी से सिर्फ ढाई मील है। यहाँ से एक कच्ची सड़क टीकमगढ़ को और दूसरी ललितपुर को जाती है। पुराना महल टूटी फूटी हालत में है। गदर के दिनों में राजा अंग्रेजों से लड़ा था। इसी से उसका राज छिन गया। पहले यहाँ का पान बहुत मशहूर था।

बार—यह गांव ललितपुर से १७ मील दूर है। यह पहाड़ी के पूर्वी ढाल पर बसा है। यहीं बाँध बना कर सिंचाई का ताल तयार किया गया। बांध के पास केवड़ा के पेड़ हैं पहाड़ियों पर बन है जिसके बीच में बुन्देले राजपूतों की पुरानी इमारतों के खंडहर हैं।

धौरी सागर गाँव मदौरा से ८ मील और ललित-पुर से २२ मील दक्षिण पूर्व की ओर बसा है। यहीं महाराज छत्रसाल ने मुगलों की शाही सेना को हराया था। सिंचाई के ताल के ऊपर बसा हुआ गांव बड़ा सुन्दर मालूम होता है।

गिरार गांव धसान नदी के किनारे एक पहाड़ी के ऊपर बसा है। यहाँ कई पुराने मन्दिर और क़िले के खंडहर हैं।

मदौरा गांव ललितपुर के दक्षिण पूर्व में ३० मील की दूरी पर बसा है। यहां एक स्कूल, थाना और डाकखाना है। गाँव दक्षिणी सिरे पर मरहठों का बनवाया हुआ एक टूटा किला है। इसके नीचे सिंचाई का एक ताल है।

सढ़मार—मदौरा से ३ मील उत्तर और ललितपुर से ३१ मील दक्षिण-पूर्व की ओर बसा है। यहां कई जैन मन्दिर हैं। एक सती शिला के ऊपर सम्बत १८१३ और बादशाह आलम गीर का नाम खुदा हुआ है।

———

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल	२।)	२१—टर्की	१)
२—भूतत्व	१॥)	२२—अफ़ग़ानिस्तान	१)
३—भूगोल एटलस	१॥)	२३—भुवनकोष	१)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति	१)	२४—एबीसीनिया	।॥)
५—मिडिल भूगोल भाग १—४ मूल्य प्रत्येक भाग	।॥)	२५—गंगा-अंक	१)
६—हमारा देश	॥=)	२६—गंगा-एटलस	॥)
७—संक्षिप्त बालसंसार (नया संस्करण)	१।)	२७—देशी राज्य-अंक	२॥)
८—हमारी दुनिया	॥)	२८—पशु-पक्षी-अंक	१)
९—देश निर्माता	॥)	२९—महासमर-अंक	१।)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग	।)	३०—महासमर एटलस	॥)
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग	।)	३१—सचित्र भौगोलिक कहानियां	॥)
१२—जातियों का कोष	॥)	३२—पशु-परिचय	॥)
१३—अनोखी दुनिया	।॥)	३३—प्राचीन जीवन	॥)
१४—आधुनिक इतिहास एटलस	१)	३४—भूपरिचय (संसार का विस्तृत वर्णन)	३)
१५—संसार-शासन	२।)	३५—मेरी पोथी	॥=)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण)	१।)	३६—आसाम-अंक	१)
१७—स्पेन-अंक	१)	३७—द्वितीय महासमर-परिचय	१॥)
१८—ईरान-अंक	१)	३८—संयुक्त प्रांत-अंक	३॥)
१९—चीन-अंक	१)	३९—महासमर दैनन्दिनी डायरी	२)
२०—चीन-एटलस	॥)	४०—भारतीय भाषाएँ	१)
		४१—नागरिक दर्शन	॥=)
		४२—हमारा संसार	१॥)